

# गीताञ्जलि



महाकवि सर रवीन्द्रनाथ ठाकुर की जगत्प्रसिद्ध  
पुस्तक 'गीताञ्जलि' का हिन्दी अनुवाद

अनुवादक,

महाशय काशीनाथ

प्रकाशक,

वैद्य शिवन रायण मिश्र मिजमल

प्रकाश पुस्तकालय,

कानपुर

दूसरी बार ]



[ डेढ़ रुप

वेद शिबनारायण लिथ्र प्रिक्शन द्वारा  
प्रकाश औषधालय के  
प्रकाश प्रिंटिंग प्रेस कानपुर में छुद्रित ।

## विशेष

वर्तमान भारतीय साहित्यिकों में डाक्टर सर रवीन्द्र नाथ का सबसे ऊँचा है। अर्वाचीन भारतीय कवियों में केवल आपकी भा के सामने सारे देश ने ही नहीं, किन्तु सारे संसार ने सिर झुकाया। “आँख की किरकिरी”, “नौका डूबी”, “गोरा”, “घर बाहर” आदि ग्रन्थों ने “नैवेद्य”, “त्वेया” आदि काव्य ग्रन्थों, “रक्तकवरी”, “कंधारा” आदि नाटकों और अनेक लेखों और अख्यायिकाओं द्वारा आपने हस्त का उपकार किया है। पर वह ग्रन्थ जिसने आप को संसार भर में प्रसिद्ध कर दिया, जिसके कारण आप को सवा लाख रुपये का नोबेल पुरस्कार नामक पारितोषिक मिला, जिस पर ईट्स, रायेन्सटन और एम्ड्यूज महानुभाव मुग्ध हो गये, और जो आपके सारे ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ गण्य है, वह है “गीताब्जलि”। हमने बँगला गीताब्जलि की ओर अँग्रेजी गीताब्जलि से की है। हम कह सकते हैं कि कई अँग्रेजी गीताब्जलि बँगला गीताब्जलि से बड़ी चढ़ी है। यह पुस्तक गीताब्जलि का हिन्दी अनुवाद है। रवीन्द्र बाबू बंगाली हैं। बँगला साहित्यसेवी हैं। पर आपकी अँग्रेजी बड़ी अलंकृत और आकर्षक है। उसे देखकर आप नहीं कह सकते कि वह एक बंगाली लेखक की भाषा नहीं है। फिर, रवीन्द्र बाबू की लेखनशैली अटपटी और अलंकार पूर्ण होती है। मुहावरों की तो कड़ी बँ

जाती है। ऐसी भाषा का हिन्दी उलथा करना सहज नहीं। एक तो मूखन भाषाओं के लिए हिन्दी में शब्द कठिनता से मिलते हैं, दूसरे वर्तमान लेखक भाषा पर प्रभुत्व रखने का दावा नहीं कर सकता।

अन्य महाकवियों की तरह रवीन्द्र ने भी अलंकार, उपमा और रूपकों का बहुतायत से प्रयोग किया है। यह प्राकृतिक इश्वरों से; घनघोर घटा, अँधेरी रात, रमणीय प्रकृत, सुन्दर सूर्योदय इत्यादि से; प्रेमी प्रेमिकाओं के हाव भावों से, अन्य सांसारिक व्यवहारों से और विशेषतः गान वाद्य से (याद रहे कि रवीन्द्र बाबू महाकवि ही नहीं, किन्तु महागायक भी हैं) लिये गये हैं। इनको साधारणतः समझ लेना तो किसी साहित्य-प्रेमी के लिए कठिन न होगा पर इनके गूढ़ अभिप्रायों का ठीक ठीक पता लगाना टेढ़ी खीन है। इनके अनेक अर्थ हो सकते हैं। संभव है कि जो अभिप्राय हमने समझा, वह कवि का अभिप्राय न हो। संभव है कि कवि का अभिप्राय इतना उच्च और गुप्त हो कि वहाँ तक पहुँचना हमारी शक्ति के बाहर हो। अपने को कवि की स्थिति में—मानसिक अवस्था में—रखते बिना आप कवि के भाव पूर्णतया नहीं समझ सकते। रवीन्द्र की मानसिक अवस्था तक पहुँचना सबके लिए संभव नहीं। उनकी बहुत सी मानसिक अवस्थाओं को चित्त में लाना भी शायद असंभव हो। यह एक ऐसी कठिनता है जिस से महाकवियों के पाठक और अनुवादक अच्छी तरह परिचित हैं। कुछ ऐसे गीत हैं जो कवि ने अपनी निराखी ही तरंग में लिखे हैं।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इन सब बातों के कारण अनुवाद करने में बड़ी कठिनाइयाँ पड़ी हैं। हमने प्रयत्न किया है कि गीतों के भाव पाठकों की समझ में आजायँ। न तो बँगला और न इंग्रेजी “गीतांजलि” में ही गीतों के शीर्षक दिये हुए हैं। हमने

एक गीत का ऐसा परिष्कार बनाने का प्रयत्न किया है जो गीत के आन्तरिक भाव का प्रकट करता हो और जिसकी सहायता से पाठकों को सारा गीत समझने में सुविधा हो। आज काज परिष्कार के जेता दण्डों चिन्तार करना पडा है।

यहाँ यह कहना आवश्यक है कि यह सब गीतों को एक बार नहीं दो बार नहीं, कई बार पढ़े। भिन्न भिन्न समयों और भिन्न भिन्न अवस्थाओं में पढ़े, तभी वे पूरा आनन्द और लाभ उठा सकेंगे। सुप्रसिद्ध अंग्रेजी कवि मि० ईट्स इस गीतों के विषय में लिखते हैं:—“इन्हें मैंने पाया में बहुत दिनों तक अपने साथ रक्खा है। मैंने इन्हें रेलगाड़ियों में, घोंडागाड़ियों में और हॉटलों में पढ़ा है। पढ़ते पढ़ते मैं बहुधा ऐसा उत्तेजित हो जाता हूँ कि उत्तेजना को छिपाने के लिए मुझे पुस्तक बन्द कर देना पड़ी है।”

प्रभाव का वर्णन करने वाले एक गीत को आप एक बार अपने कमरे में बैठ कर पढ़िये। दूसरी बार उसी गीत को प्रभात के समय नदी के किनारे या जंगल के पेड़ों के नीचे या गाँव के खेतों में टहल टहल कर पढ़िये, आपको भेद मालूम हो जायगा। किसी गीत के प्रथम बार पढ़ने से जो प्रभाव मन पर पड़ेगा वह तीसरी या चौथी बार पढ़ने के प्रभाव के सामने फीका जान पड़ेगा। शोक या चिन्ताग्रस्त मस्तिष्क में जो भाव उत्पन्न होंगे वह प्रफुल्लित चित्त पर उत्पन्न होने वाले भावों से भिन्न होंगे।

इसी प्रकार पढ़ते पढ़ते सब गीतों के आन्तरिक अभिप्राय में प्रवेश होना सम्भव है। यह कहना अत्युक्ति न होगी कि बहुधा गीत के आन्तरिक भाव इतने छिपे रहने हैं कि सहसा उनका ध्यान भी नहीं आता। पर जब एक बार उनका पता लग गया तब सारे गीत के विचित्र आनन्द आने लगता है। उदाहरण देखिये।

कुछों गीत में कवि ने अपने जीवन को एक छोटा तुच्छ पृष्ठ माना है। वह परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि इस तुच्छ भेंट को स्वीकार करे।

आठवाँ गीत कृत्रिमता और बाह्याङ्ग्य की निन्दा करता है। यज्ञ धर्म और नाम धर्म के मनुष्य सब कहीं नहीं जा सकते, सब तरह के लोगों से बात चीन नहीं कर सकते, अपने मङ्कुचिन्त क्षेत्र के बाहर पैर नहीं रख सकते और इसलिये उनके जीवन का पूर्ण विकास नहीं होता।

तेतीसवाँ गीत बतलाता है कि प्रलोभन कैसी चालाकी से हृदय में प्रवेश करते हैं और फिर अवसर पाकर अपना पूरा अधिकार कैसे जमा लेते हैं।

पैंतीसवें गीत में एक आदर्श समाज का चित्र खींचा गया है।

वासठवें गीत में कवि कहता है कि बालक के द्वारा प्रकृति—परमेश्वर—का रहस्य कैसे समझ में आता है। रंग विरंगे खिलौने देख कर बालक प्रसन्न होता है, इसलिये पिता उसे रंग विरंगे खिलौने देता है। इसी प्रकार परमेश्वर ने जगत को प्रसन्न करने के लिए मेघ, जल और फूलों को रंग विरंगा कर दिया है।

दो चार गीत ऐसे भी हैं जो केवल कवियों या महान्यायों पर लागू हैं, और जिनका साधारण जनों से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं।

इक्यासीवें गीत में कवि कहता है कि मैंने बहुधा समय के नाश पर पश्चात्ताप किया है पर वास्तव में समय कभी व्यर्थ नष्ट ही नहीं हुआ। सम्भव है कि यह कथन कवियों के विषय में ठीक हो, पर औरों के विषय में ठीक नहीं हो सकता।

गीतांजलि में अनेक प्रकार के गीत मिलेंगे । ४, ६, ३४, ३६, ३६, ७६, और १०३ संख्या के गीतों में परमेश्वर से प्रार्थना की गई है ।

२, ३, ७, १३, १४, १६, ४६ और १०१ संख्या के गीतों में गाने बजाने की भाषा का प्रयोग किया गया है । जैसा कि हम कह चुके हैं, रवीन्द्र दावू बड़े भारी गायक हैं और इसलिये कोई आश्चर्य नहीं कि प्रार्थना, प्राकृतिक दृश्य, जीवन-मरण, ब्रम्हण मोक्ष आदि मन्त्र ही विषयों में आपने गाने बजाने की भाषा का समावेश कर दिया है ।

१६, २२, ४०, ४८, ५३, ५७, ५६, ६१, ६८ और ८० संख्या के गीतों में प्राकृतिक दृश्यों का अच्छा वर्णन है ।

कवियों की दृष्टि सौन्दर्य पर बड़ी जल्दी जा पड़ती है । जहाँ साधारण नेत्रों को कोई मनोहरता नहीं दिखलाई पड़ती, या कुरूप ही कुरूप दिखलाई पड़ता है, वहाँ कवि के नेत्र सौन्दर्य ढूँढ़ निकालते हैं ।

३, १२, १६, ४१, ४३, ४६, ५३, ६६, ६६, ७१, ८७, ९६ और १०० संख्या के गीतों में ( Mysticism ) अलौकिकता, गूढ़ता, रहस्ययुक्तता की झलक है ।

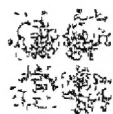
कवि अपनी आत्मा को सर्वव्यापी आत्मा में मिला देना चाहता है । ब्रह्मलोक की दृष्टि से वह जीवन, मरण, देश, काल आदि पर विचार करता है । उसके लिए मृत्यु कोई भयंकर दुःखप्रद-वस्तु नहीं । वह तो अनन्त जीवन में प्रवेश करने का द्वार है । अनन्त के साथ विवाह करने की रस्म है । ब्रह्म के पास जाने, ब्रह्म में मिल जाने व

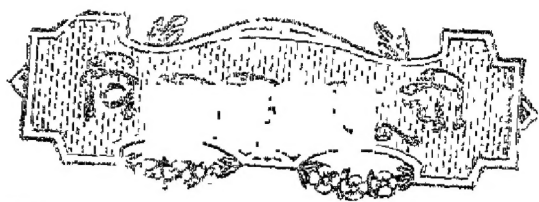


जाता है। अभी कायल है कि आप को श्रीमद् बाबू को कश्मीर में मुग़ल  
जैन परलोक की प्रशंसा से बहुत से चीज मिलेंगे।

आशा है कि जो नया-य बैरला या ऑर्गेज जानते हैं इससे  
इस हिन्दी अनुवाद से उन भाषाओं की गीतांजलि के सम्बन्ध में  
सहायता मिलेगी।

हम अन्तर्गत मो-एक एंडरज मन्दिर के रूप में कहते हैं  
'जिसके प्रधान से महाकवि ने गीतांजलि के हिन्दी स्वरूप के प्राथमिक  
कर्म की आज्ञा दी है।





२० गीत का नाम

- १ मेरी कृपा
- २ गान मन्त्रिमा
- ३ बिगाट गायन
- ४ मेरा संकल्प
- ५ उत्कण्ठ
- ६ जीवन-पुष्प
- ७ अलंकार-विरहकार
- ८ भूषण-भात-वालरु
- ९ प्रभु-निष्ठा
- १० दोलबन्धु
- ११ सखी उषालला
- १२ दीर्घ-यात्रा
- १३ धूर्तपाय
- १४ कठोर कर्तव्य
- १५ केवल गान
- १६ मेरी अन्तिम आकांक्षा
- १७ प्रेम प्रतीक्षा
- १८ प्रेम से निकाल
- १९ प्रेम-धीन

पृष्ठ

२० गीत का नाम

पृष्ठ

- |    |                      |          |
|----|----------------------|----------|
| १  | २० अन्तर्गत सपने     | २०       |
| २  | २१ अब चल दो          | २१       |
| ३  | २२ इदय-जग            | २२       |
| ४  | २३ प्रेम-वर्धन       | २३       |
| ५  | २४ आलसी और अधम       |          |
| ६  | जीवन से सृष्टि देना  | २४       |
| ७  | २५ प्यारी निद्रा     | २५       |
| ८  | २६ प्रेमी का स्वप्न  | २६       |
| ९  | २७ प्रेम की उजोति    | २७       |
| १० | २८ वापना की बेड़ी    | २८       |
| ११ | २९ अपने ही कागजार का |          |
| १२ |                      | बन्दी ३० |
| १३ | ३० दहीला गायी        | ३१       |
| १४ | ३१ अद्भुत वन्य       | ३२       |
| १५ | ३२ विकल प्रेम        | ३३       |
| १६ | ३३ प्रलोभन का प्रभाव | ३४       |
| १७ | ३४ स्वल्प याचना      | ३५       |
| १८ | ३५ आदर्श-मान         | ३६       |
| १९ | ३६ बल-भिन्ना         | ३७       |

( ज )

गीत का नाम	पृष्ठ	नं० गीत का नाम
अनन्त यात्रा	३८	१८ विश्वव्यापी आनन्द
केवल तेरी चाह	३९	१९ प्रकृति में ईश्वरीय प्रेम
संकट-हरण	४०	का दिग्दर्शन
वर्षा के लिये प्रार्थना	४१	६० लड़कपन
प्रेममयी प्रतीक्षा	४२	६१ बालछबि का श्रोत
संयोग में विलम्ब		६२ बालक द्वारा प्रकृतिरहस्य
और आशा ४४		का बोध
अज्ञात आगमन का		६३ जीवन विकाश में
स्मरण ४५		विधाता का हाथ
धैर्यपूर्ण आशा	४६	६४ शक्तियों का दुरुपयोग
आता है	४७	६५ भक्त और भगवान की
लो, वह आगया	४८	एकता
साक्षात् दर्शन	४९	६६ अन्तिम भेट
सरल सिद्धि	५०	६७ इहलोक और दृढलोक
सच्चे भाव की महिमा	५२	६८ मेघ
दान महात्म्य	५३	६९ विश्वव्यापी जीवन
अवसर की उपेक्षा	५५	७० विश्वव्यापी आनन्द
मेरा नवीन शृंगार	५७	७१ माया
चूड़ी और खड्ग की		७२ यह वही है
तुलना ५९		७३ बन्धन में मुक्ति
अनोखा परोपकार	६०	७४ प्रस्थान का समय
दुःख में सुख की आशा	६२	७५ विश्वव्यापी पूजा
प्रेमियों की एकता	६३	७६ ईश्वर के सन्मुख रहने की
प्रकाश ६४		इच्छा

( क )

नं०	गीत का नाम	पृष्ठ	नं०	गीत का नाम	पृष्ठ
७७	मनुष्य की सेवा ही ईश्वर की सेवा है	८७	६१	मृत्यु की स्नेहमयी प्रतीक्षा	१०४
७८	खोया हुआ तारा	८८	६२	मृत्यु के उस पार	१०५
७९	अभिलषित वेदना	९०	६३	संसार से विदा	१०६
८०	ब्रह्म में लीन होने की आकांक्षा	९२	६४	परलोक यात्रा	१०७
८१	समय की विचित्र गति	९३	६५	जीवन मरण की समता	१०८
८२	अभी समय है	९४	६६	मेरे अन्तिम वचन	१०९
८३	अनोखा हार	९५	६७	प्रकृतिप्रभु का बोध	११०
८४	वियोग	९६	६८	काल बली से कोई न जीता	१११
८५	योद्धाओं का आवागमन	९७	६९	हरि के हाथ निवाह	११२
८६	यमरागमन	९८	१००	परब्रह्म में लय	११३
८७	नित्यता की प्राप्ति	९९	१०१	कविता का प्रसाद	११४
८८	जीर्ण मन्दिर का देवता	१००	१०२	अर्थ रहस्य	११५
८९	मौनव्रती वैरागी	१०२	१०३	पूर्ण प्रणाम	११६
९०	मृत्यु का आतिथ्य	१०३			



प्रकाश पुस्तकालय द्वारा

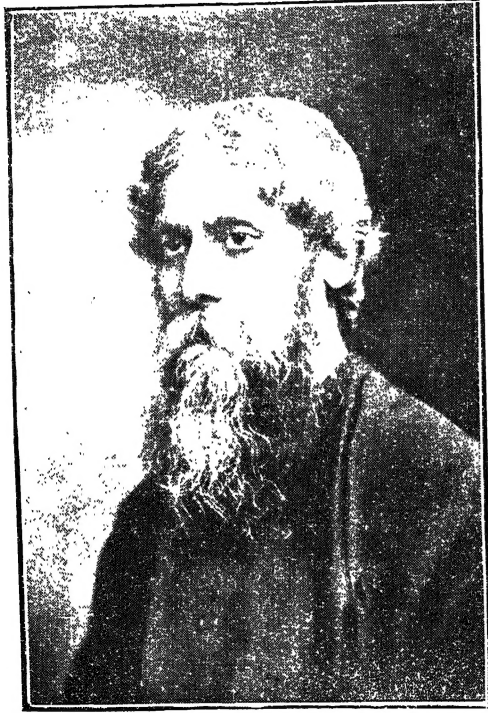
प्रकाशित

रवीन्द्र बाबू के ग्रन्थ

गोग	[ उपन्यास ]	३)
घर बाहर	[    ::    ]	११)
सुक्तधारा	[ नाटक ]	११=)

प्रकाश पुस्तकालय, कानपुर





महाकवि सर रवीन्द्रनाथ ठाकुर